International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

रहस्यवादी मुगल राजकुमार: दारा शिकोह

Dr Archana Ojha
Associate Professor: History Dept
Kamala Nehru College, University of Delhi
ghostbuster.ojha@gmail.com

सार: यह पेपर एक अद्वितीय मुगल राजकुमार, दारा शिकोह की यात्रा का पता लगाने का प्रयास करेगा। उन्होंने सुन्नी इस्लामी आस्था और अनुशासन की दुनिया में अंतर्निहित रहते हुए एक बौद्धिक प्रवचन और प्रेरणा के रूप में कादिरी सूफी सिलसिले में गहरा अटूट और स्थायी विश्वास विकसित किया। अपने जीवन के प्रारंभिक चरण से ही, उन्होंने फकीरों, संतों और साम्राज्य में अपने युग और समय के दौरान प्रचलित बौद्धिक और दार्शनिक ज्ञान के प्रति झुकाव दिखाना शुरू कर दिया था। उन्होंने अपनी दैवीय संप्रभुता और राजसत्ता के प्रतीक के रूप में सामुद्रिक ज्ञान प्रणालियों का ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया क्योंकि यदि परिस्थितियाँ उनके पक्ष में होतीं तो वे सम्राट शाहजहाँ के उत्तराधिकारी के रूप में नामित सम्राट थे।

उनकी शिक्षा और बौद्धिक जिज्ञासा ने उन्हें राजत्व की एक नई अवधारणा विकसित करने के इस अनूठे प्रयोग में कूदने में सहायता की जो अन्य महान मुगल सम्राटों से अलग थी। उन्होंने अपनी ज्ञान प्रणाली में एक नए दैवीय रूप से नियुक्त राजत्व का विश्लेषण, संश्लेषण और एकीकरण करने के लिए अपनी बौद्धिक क्षमताओं और विचार प्रक्रिया का उपयोग किया। उन्होंने सूफी और प्राचीन भारतीय बौद्धिक प्रवचनों के समुद्र से निष्कर्ष निकाला। उन्होंने दैवीय एकेश्वरवाद के अपने आवश्यक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से अपनी विचार प्रक्रिया को दुनिया के सामने प्रकट किया। वह एकमात्र मुगल राजकुमार थे जिन्होंने अपने बौद्धिक और दार्शनिक दृष्टिकोण के माध्यम से उत्पन्न दिव्य ज्ञान के साधक बनने के लिए अपना समय लोगों, पुस्तकालयों और अनुभवों के बीच बिताया। विशेष रूप से, उनकी रुचि मानव जीवन, अस्तित्व और अर्थ के विभिन्न पहलुओं को समझने में थी। वह धार्मिक परंपरावाद की परतों के पीछे छिपे दिव्य सत्य की खोज कर रहे थे, जो पुरोहित वर्गों द्वारा छिपा हुआ था, जिनसे धर्म दैनिक जीविका के लिए अस्तित्व में था। राजकुमार को सच्चाई उजागर करने और सभी धर्मों, समुदायों और लोगों के सामान्य कल्याण के लिए आवेदन करने की आवश्यकता थी।

पेपर उनकी बौद्धिक शक्ति पर विचार करेगा जो उनके द्वारा लिखी गई कई पुस्तकों में प्रकट हुई और उन सभी को दुनिया और पर्यावरण से प्रभावित एक बौद्धिक प्रवचन के रूप में एक साथ रखने का प्रयास किया जाएगा जिसका उन्होंने सामना किया। एक मनोनीत सम्राट के रूप में, उन्होंने सूफी और वेदांतिक दोनों दर्शनों को अपने राजनीतिक-सांस्कृतिक लौकिक शाही व्यवस्था में मिश्रित करके शाही संप्रभुता के अपने ब्रांड को ढालने के लिए समय और भौतिक धन का उपयोग किया।

कीवर्ड: कादिरी सिलसिला, विश्ववाद, ईश्वरीय एकेश्वरवाद, रहस्यवाद, अनुवाद

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

रहस्यवादी मुगल राजकुमार: दारा शिकोह

परिचय

दारा शिकोह आज़ादी से पहले भी शोध का विषय रहा है। हालाँकि, 1940 से 1980 के बीच ध्रुवीकृत राय सामने आई जब भारत और सीमा पार के विद्वानों ने राष्ट्रवादी,[1] उदारवादी[2] और धर्मनिरपेक्ष विचारों [3]के साथ विशुद्ध रूप से धार्मिक दृष्टिकोण से उनका विश्लेषण करना शुरू किया, इस धारणा के आधार पर कि मुगल राज्य केंद्रीकृत था।[4] हालाँकि, विचारों की इस पंक्ति की आलोचना 1990 में शुरू हुई जब संशोधनवादियों के विद्वानों ने स्थान और समय (मकड़ी के जाल की तरह) और एक निर्मित राज्य (फरहत) के माध्यम से नियमित अंतराल के साथ विकासवादी दृष्टिकोण से मुगल राज्य का विश्लेषण करना शुरू किया। हसन). जब इसे मुगल राजकुमार दारा शिकुह के मूल्यांकन पर लागू किया गया, जो सिंहासनारूढ़ होने की अपनी मायावी दुनिया में अच्छी तरह से फंसा हुआ था, तो संशोधनवादियों का दृष्टिकोण सत्रहवीं शताब्दी की बदलती गतिशीलता के तहत विकसित होना शुरू हुआ। उन्होंने राजत्व की एक अनूठी मुगल अवधारणा तैयार करना शुरू किया, जिसमें उनके पूर्ववर्तियों द्वारा पहले से स्थापित कई मौजूदा परंपराओं को उधार लिया गया था, जिन्होंने संप्रभुता के अपने संबंधित सिद्धांतों को विकसित करने के लिए विद्वानों की कक्षाओं का उपयोग किया था। दारा शिकोह अपने अध्ययन, मूल्यांकन और अपनी बौद्धिक, विश्लेषणात्मक मानसिकता और जिज्ञासु स्वभाव से छनकर समझने की शक्ति के आधार पर एक अलग पहचान बनाना चाहते थे। उनका जन्म और पालन-पोषण सत्रहवीं सदी के मुगल जगत के बौद्धिक परिवेश में हुआ था, जिसकी शाही सीमाएं उसी गति से विस्तारित हो रही थीं जैसे इसके आर्थिक विकास ने शाही समाज की सामाजिक संरचनाओं में बदलाव लाये थे। इन बदलावों ने पेशेवर विद्वान वर्गों के उद्भव और बढ़ते आर्थिक महत्व में सहायता की। इस युग को एक बेहतर परिवहन नेटवर्क भी मिला, जिसका अर्थ था अधिक सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता, और पुस्तकों के लिए कागज के व्यापक उपयोग ने पूरे साम्राज्य में क्षेत्रीय और प्राचीन भारतीय भाषाओं के साथ फ़ारसी साहित्यिक परंपराओं के प्रसार और एकीकरण में सहायता की।

जीवन इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा

उनके जीवन के पहले चरण में, हमें अपने पिता, सम्राट शाहजहाँ की गर्मजोशी और सुरक्षा में पले-बढ़े एक राजकुमार की झलक मिलती है, जिन्होंने उन्हें सर्वोच्च मनसब पद और मुगल दरबार में एक स्थायी आधार के साथ-साथ लाल तम्बू का प्रयोग अधिकार भी दिया था। अपनी पसंद को स्थायी बनाने की श्रृंखला में, शाहजहाँ ने दारा के लिए एक विवाह गठबंधन की व्यवस्था की और यह सुनिश्चित किया कि दारा के बाद, उसके दो बेटे शुजा,

[1] आई.एच.कुरैशी, भारत-पाकिस्तान उपमहाद्वीप का मुस्लिम समुदाय, 610-1947: एक संक्षिप्त ऐतिहासिक विश्लेषण (द हेग: माउटन, 1962); जहीरुद्दीन फारुकी, और औरंगजेब एंड हिज टाइम्स (दिल्ली: डी.बी. तारापोरवाला संस एंड कंपनी, 1935); एस. मोइनुल हक, प्रिंस अवरंगज़ेब (कराची: पाकिस्तान हिस्टोरिकल सोसाइटी, 1962); शिबली नोमानी, आलमगीर (दिल्ली: इदाराह-ए अदबियत-ए डेल्ली, पुनर्मुद्रण, 1982)

[2] जवाहरलाल नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इंडिया (न्यूयॉर्क: द जॉन डे कंपनी, 1946), पी. 219.

[3] मुनिस डी. फारुकी में, "दारा शुकोह। मुगल भारत में वेदांत और शाही उत्तराधिकार" संस्करण में। वसुधा डालमिया और मुनिस डी. फारुकी, मुगल इंडिया में धार्मिक सहभागिता, ओयूपी, भारत, 2014, पी. 32

[4] वी.डी. महाजन, मुस्लिम रूल इन इंडिया (दिल्ली: एस. चंद, 1962); ए.बी. पांडे, उत्तर मध्यकालीन भारत (इलाहाबाद: सेंट्रल बुक डिपो, 1963); आर.सी. मजूमदार, एच.सी. रायचौधरी और कालीकिंकर दत्ता, भारत का उन्नत इतिहास (दिल्ली: मैकमिलन, 1967); ईश्वरी प्रसाद, मुग़ल साम्राज्य (इलाहाबाद; चुग प्रकाशन, 1974); जदुनाथ सरकार, औरंगज़ेब का संक्षिप्त इतिहास, 1618-1707 (कलकत्ता: एम.सी. सरकार, 1930); के.आर. कुनांगो, दारा शुकोह (कलकत्ता: एस.सी. सरकार, 1952)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

औरंगजेब और मुराद के समान मनसब रैंक देकर सिंहासन के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। विरोधाभास की एक तस्वीर में, उनके अन्य तीन भाई बेहद प्रतिस्पर्धी थे और राजनीतिक-सैन्य श्रेष्ठता हासिल करने के लिए रियासती नेटवर्क को एक साथ जोड़ने की गहन प्रक्रिया में लगे हुए थे और उमरा का समर्थन प्राप्त कर रहे थे, जिसके साथ वे गठबंधन और संरेखण की एक प्रणाली का निर्माण कर रहे थे। अपने प्रतिस्पर्धी भाइयों के विपरीत, दारा शिकोह ने "अन्य" (कादिरी सूफियों, संतों और ब्राह्मण विद्वानों) की संगति का आनंद लिया, जिसने उनके व्यक्तित्व के चारों ओर एक आध्यात्मिक आभा पैदा की। जैसा कि उनका मानना था, इस नई उभरती पहचान ने उन्हें अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में मुगल सिंहासन पर आने के लिए अधिक उपयुक्त बना दिया। इस एकीकरणवादी दृष्टिकोण का उद्देश्य आध्यात्मिक पथ के माध्यम से अपने राजनीतिक आधार का विस्तार करना था जो अंततः उनके उत्तराधिकार और उनके हाथों में राजनीतिक शक्ति को मजबूत करने में सहायता करेगा। अपनी आवासवादी विचार प्रक्रिया के साथ, अंतर-धार्मिक वैचारिक प्रवचन की एक टेपेस्ट्री बनाने के आधार पर, उन्होंने अपनी शाही छत्रछाया के तहत रईसों के शक्तिशाली समूहों को लाने का प्रयास किया, जिन्होंने खुद को उनकी वैचारिक स्थिति के साथ पहचाना। उनका वैचारिक कार्य इस्लामी विचार और तौहीद (एकता) की सूफी अवधारणा के इर्द-गिर्द घूमता था, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह विभिन्न धार्मिक आस्थाओं में पाया जाता है।[5] राजीव किनरा के अनुसार, इस मुगल राजकुमार के इन असाधारण व्यक्तिगत प्रयासों ने दारा के व्यक्तित्व को एक अच्छे मुस्लिम या एक बुरे मुस्लिम के रूप में ध्रुवीकृत कर दिया।[6]

दारा शिकोह की आध्यात्मिक दुनिया का विकास

17वीं शताब्दी में दारा का मुगल स्थानिक और भौगोलिक क्षितिज और अधिक विस्तृत हो गया था क्योंकि शाहजहाँ ने दिल्ली में पहले नियोजित शहर शाहजहानाबाद के विकास के साथ-साथ एक गैर-राजनीतिक स्मारक, ताज महल का निर्माण कराया था। नया शहर मुगल क्षितिज में दो दुनियाओं को जोड़ने के सूफीवादी और हिंदू सिद्धांतों के आधार पर भौतिक संपदा और आध्यात्मिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता था। इस नई मुगल दुनिया में, दारा शिकोह ने सूफियों का मार्ग अपनाया, जिन्हें ईश्वर का दूत माना जाता था और पैगंबर (अहल-ए सुन्नत वल जामा 'अत) के समुदाय से संबंधित माना जाता था। कादिरी सूफियों का एक व्यापक विश्वव्यापी दृष्टिकोण था जो ईश्वर की एकता और मानवता की सेवा में विश्वास और दो प्रमुख समुदायों के बीच वैचारिक समानता स्थापित करने पर आधारित था। दारा शिकोह ने अपनी शिक्षा, बुद्धि और बातचीत के माध्यम से, इन सूफी सिद्धांतों को अपनी सावधानीपूर्वक तैयार की गई आध्यात्मिक शाही दुनिया में एकीकृत और आत्मसात करने का प्रयास किया। सूफियों और संतों के साथ दारा की निरंतर बातचीत बहुसांस्कृतिक प्रारंभिक आधुनिक भारतीय समाज का सर्वोच्च प्रतिनिधि बनने के लिए उनकी विकसित आध्यात्मिक कल्पना को उनके शाही व्यक्तित्व में मिश्रित करने की एक चतुराई से तैयार की गई एकीकृत प्रक्रिया थी। उनकी सूफ़ीवादी छवि को सावधानीपूर्वक विकसित करने से, उनका निजी क्षेत्र सामाजिक संपर्क और विलायत के लिए केंद्र बिंदु बन गया, जिसका अर्थ था कि राजनीतिक दुनिया आध्यात्मिक क्षेत्र से ओत-प्रोत हो गई।[7] उन्होंने अपने लेखन और विद्वतापूर्ण प्रवचनों के माध्यम से व्यक्त

[5] मुनिस डी. फारुकी, पी. 33. राजीव किनरा, "इन्फैंटिलाइजिंग बाबा दारा: द कल्चरल मेमोरी ऑफ दारा शिकोह एंड द मुगल पब्लिक स्फीयर," जर्नल ऑफ पर्सियनेट स्टडीज, संख्या। 2 2009: पी. 168

[6] सुप्रिया गांधी, पृष्ठ 105-119

[7] सुप्रिया गांधी, पी. 119.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अपनी बौद्धिकता और शैलीगत परंपरा के आधार पर एक नया मुगल शाही सांस्कृतिक दृष्टिकोण बनाने का प्रयास किया।[8]

रहस्यमय यात्रा

उनकी दार्शनिक यात्रा में आख्यानों की एक जटिल प्रणाली और व्यक्तिगत अनुभव शामिल थे, जिनकी उन्होंने खुद को कादिरी सूफी सिलसिले के साथ जोड़ते समय कल्पना की, बातचीत की और लागू किया। कादिरी संप्रदाय इब्न अरबी के दर्शन और पूजा की सादगी, अनुष्ठानों से रहित जीवन की तपस्या में विश्वास करता था। आदेश ने विभिन्न सामाजिक और व्यावसायिक वर्गों के साथ अंतर-धार्मिक संवाद बनाए रखा। शिक्षाओं ने एक व्यक्ति को जीवन की सुई में धागा पिरोने में मदद की ताकि शरिया के नियमों का पालन करके, उसकी आत्मा तारिक़ से हक़ीक़ तक पहुंच कर किसी के व्यक्तित्व को ईश्वर के साथ एकीकृत कर सके। कादिरी सिलसिले के इन पहलुओं ने राजकुमार को आकर्षित किया। कई अनुभवों और बातचीत के बाद, उन्होंने 1640 में पच्चीस साल की उम्र में सफीनत-उल-अवलिया (संतों का जहाज) की रचना की, जिसमें कादरी, चिश्ती, कुबरावी और सुहरावर्दी आदेशों पर एक कथा प्रदान की गई। उनके व्यक्तित्व का एक और पहलू इस काम से उभरता है क्योंकि उन्होंने महिला सूफियों और उनकी बहन जहांआरा बेगम के साथ उनकी विस्तृत बातचीत का उल्लेख किया है, जिसने उन्हें कादिरी सिलसिले की ओर आकर्षित किया।

1643 में, अपने समय के प्रमुख कादिरी सूफियों से प्राप्त सूफी ज्ञान को प्राप्त करने में सुरक्षित, राजकुमार ने अपनी दूसरी पुस्तक, सकीनत-उल-अवलिया (द ट्रैंक्विलिटी ऑफ सेंट्स) की रचना की। यह कार्य मुगल राजकुमार की दैवीय शक्ति की प्राप्ति और दैवीय कृपा से संपन्न "सूफी सम्राट" के रूप में उनके उद्भव पर प्रकाश डालता है।[9] इसके अलावा, वह मुगल शाही परिवार के एकमात्र सदस्य थे जिन्हें कादिरी संप्रदाय के साथ घनिष्ठ संबंध के कारण "आध्यात्मिक गुरु" बनने के लिए नियुक्त किया गया था। इससे उन्हें 'सूफी' और 'रॉयल्टी' दोनों बनने का विशेषाधिकार मिला जो किसी के व्यक्तित्व में एकीकृत हो गया।[10]

दारा का सूफीवादी लेखन हसनत-उल-अरिफिन की रचना के साथ जारी रहा, जिसमें 1653 में लिखी गई मजमा-उल बहरीन (दो समुद्रों का मिलन स्थल") के बाद रहस्यवादी बातें शामिल थीं। यहां से, दारा ने अंतर-धार्मिक संबंध स्थापित किए बुद्धिजीवियों और एकेश्वरवादी-उन्मुख संतों के साथ, उन्हें भूमि अनुदान दिया। बदले में, उन्होंने मुगल राजकुमार को अपने धार्मिक हिंदू ग्रंथों की परतों के नीचे छिपे "एकेश्वरवादी" सत्य को बताया। सुप्रिया गांधी के अनुसार, उद्देश्य राजनीतिक-धार्मिक स्थापित करना था सम्राट के रूप में उनके अंतिम उत्तराधिकार में "समानता" की विचारधारा उनके शासन और अधिकार का केंद्रीय बिंदु बन गई। इसलिए, पुस्तक समानता की अवधारणा के माध्यम से एकेश्वरवादी धर्मशास्त्र का निर्माण करती है और 1655 में, जब शाहजहाँ ने दारा को शाह बुलंद इकबाल की उपाधि दी थी , "उत्कृष्ट भाग्य के सम्राट।" सुप्रिया गांधी के लिए, यह उनकी छवि और विचार प्रक्रिया को एक विशिष्ट तरीके से स्वयं-फैशन करने के प्रयास की शुरुआत थी, जो पहले किसी अन्य मुगल सम्राट द्वारा कभी नहीं किया गया था।

[8] सुप्रिया गांधी, पृ. 120-121.

[9] पूर्वोक्त, पृ. 187-193.

[10] पूर्वोक्त, पृ. 203-204.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मुगल राजकुमार ने इब्न अरबी की वहदत-उल-वुजूद (अस्तित्व की एकता) की अवधारणा के आधार पर एक "समग्र मुगल राजनीति" विकसित करने का प्रयास किया। दारा का दैवीय एकेश्वरवाद उनकी उदार मानसिकता को दर्शाता था, जो रूढ़िवादी विचार प्रक्रिया की सीमाओं से बंधा हुआ नहीं था। उन्होंने एक शासक बनने के लिए एक व्यावहारिक रणनीति अपनाई, जहां उनकी शक्तियां आध्यात्मिक, दार्शनिक और राजनीतिक क्षेत्रों से निकलकर मुगल उमरा को सिंहासन पर उनके अंतिम उत्तराधिकार के समय अपने नियंत्रण में लाने के लिए थीं। आध्यात्मिक राजकुमार बनने से उनका भौतिक लाभ मुगल सिंहासन होता।

अपनी दार्शनिक विचार प्रक्रिया को एकीकृत रूप से मजबूत करने के लिए, उन्होंने अपनी अगली पुस्तक, हसनत-उल आरिफिन (द फाइन वर्ड्स मिस्टिकल सूफीज़) की रचना की, जिसमें सबसे प्रमुख सूफियों की बातें शामिल थीं, जिन्होंने उन पर गहरा प्रभाव डाला था। पंजाबी आध्यात्मिक नेता बाबू लाल के साथ उनकी कई बातचीतें हुईं। अपने जीवन के इस मोड़ पर, दारा ने अद्वैत वेदांत के साथ ठोस संबंध रखने वाले कई अन्य हिंदू विद्वानों का भी समर्थन करना शुरू कर दिया, जिन्होंने हिंदू धर्मग्रंथों के अनुवाद में भी उनकी सहायता की। ये अनुवाद और उनका गहन अध्ययन उन्हें फ़ारसी में अनुवादित (1655-56) योगवासिष्ठ की ओर ले गया, और इस कार्य का मुख्य ध्यान भौतिक संसार में रहते हुए मुक्ति (जीवनमुक्ति) प्राप्त करने की राम की आध्यात्मिक खोज पर है। यह कार्य सकीनत अल-अवलिया से मिलता-जुलता है, जिसमें इस भौतिक दुनिया में दारा की अर्जित दिव्य भूमिका से आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के बीच संघर्ष कम हो जाता है। विस्तृत चर्चा के बाद, उन्होंने अपने शाही संसाधनों का उपयोग करके सिर्र-ए अकबर के तहत पचास उपनिषदों (द ग्रेट सीक्रेट) का अनुवाद करवाया। साम्राज्य के कुछ सबसे विद्वान संस्कृत विद्वानों द्वारा अनुवाद। वेदांतिक और सूफी विचारधाराओं को एक साथ लाने का उनका प्रयास उनकी समझ को दर्शाता है कि वेदांतिक "न केवल महान कुरान के साथ सहमति में था बल्कि उस पर एक टिप्पणी भी थी।" ऑड्रे ट्रुश्के का मानना है कि दारा शिकोह फारस-इस्लामी दुनिया में ब्राह्मणवादी अभिजात्यवाद लेकर आया। सुप्रिया गांधी, दारा अपने आध्यात्मिक सूफीवादी और वेदांतिक दृष्टिकोण के आधार पर राजत्व की अपनी अनूठी अवधारणा को विकसित करने के लिए काम कर रहे थे, जिसने उन्हें प्रमुख समुदायों का सर्वोच्च स्वामी बना दिया होता। यहीं से, दारा ने साम्राज्य के अन्य धार्मिक पहलुओं को पढ़ना, समझना और तर्कसंगत बनाना शुरू किया। उपनिषदों में उन्हें इस्लाम में बुने गए दैवीय एकेश्वरवाद के नकली धागे मिले।

निष्कर्ष

हालाँकि, यह प्रश्न उभरता है कि दारा ने केवल सूफीवादी और वेदांतिक परंपराओं को ही क्यों अपनाया। उनके लेखन से पता चलता है कि दोनों रास्ते धार्मिक विचार प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, बल्कि, अधिक महत्वपूर्ण बात, सांस्कृतिक मतभेदों को स्वीकार करने के आधार के रूप में सामाजिक सद्भाव में दार्शनिक विश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपनिषदों का बारीकी से अध्ययन करने पर इस बात का प्रमाण मिलता है कि दारा ने उनका अनुवाद क्यों करवाया। उपनिषद एक दर्शन है जो ध्यान और भगवान के एक रूप की वकालत करता है जो ज्ञान है जो अज्ञानता को दूर करता है और आत्मान (भीतर स्वयं) के गहन आत्मनिरीक्षण के माध्यम से प्राप्त आंतरिक स्थान की विजय के माध्यम से किसी के दिमाग को जागृत करने के आधार पर सार्वभौमिकता का प्रतिनिधित्व करता है। उपनिषदों में, गहन विचार-विमर्श ने विचारों और विचारों के अंतर-सांस्कृतिक संलयन पर आधारित भिन्न मतों की सहिष्णुता पर आधारित एक दर्शन विकसित किया। इन खोजों की परिणति उनका यह निष्कर्ष थी कि इस्लाम और हिंदू धर्म एक ही हैं लेकिन स्वरूप में भिन्न हैं। दोनों रास्ते अस्तित्व की एकता (अर्थात, "स्वयं" "अन्य" के साथ जुड़े हुए) पर आधारित मध्ययुगीन क्रॉस-सांस्कृतिक धाराओं का प्रतिनिधित्व करते थे, जिन्हें अन्य धर्मों में अलग-अलग तरीकों से व्यक्त लक्ष्य की एकता के आधार पर अनुभवी वास्तविकता के रूप में समझा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जाता था।[11] एक बार यह समझ में आ जाए तो यह व्यक्ति को सह-अस्तित्व और संवाद की ओर ले जाता है।[12] ऑड्रे ट्रुश्के के अनुसार, प्रिंस ने संस्कृत साहित्यिक परंपरा को फारसी-इस्लामी परंपरा का हिस्सा बनाया। मुनीस फारुकी के अनुसार, इस प्रक्रिया के माध्यम से, अगले मुगल संप्रभु बनने के लिए एक कदम के रूप में एक स्वस्थ राजसी घराने के माध्यम से विविध गठबंधनों का एक नेटवर्क बनाने का प्रयास किया गया था। सुप्रिया गांधी के लिए, मुगल राजकुमार ने अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण और संस्कृत संस्कृति की दुनिया के साथ राजत्व की अपनी अवधारणा को संतुलित करने का प्रयास किया, जिसके बारे में उन्होंने सोचा कि यह मुगल सिंहासन के लिए उनके अंतिम उत्तराधिकार में सहायता करेगा, जो उन्हें मुगल सिंहासन के लिए एक धर्मी व्यक्ति के रूप में दिखाएगा। दारा शिकोह ने मिश्रित "भारतीय परिवेश" के अपने अनुभवों और समझ से ली गई नई शाही विचारधारा के आधार पर मुगल राज्य की नींव को सिद्ध करने के लिए शाही स्तर पर प्रयास किया।[13]

दारा शिकोह, अपने सभी महान पूर्ववर्तियों की तरह, स्थानीय बौद्धिक परंपराओं के व्यापक पहलुओं, विशेष रूप से सौंदर्यशास्त्र, साहित्यिक और दार्शनिक विचारधारा के तत्वों में संलग्न होकर, अपने भीतर शक्ति की संस्कृति को इकट्ठा कर रहे थे। दारा ने "अन्य" से उधार लिए गए विचारों के साथ "स्वयं" का एक अद्वितीय व्यक्तित्व बनाने का प्रयास किया। यह प्रयास धार्मिक आचरण और प्रगतिशील विचार प्रक्रिया पर आधारित था लेकिन इसमें उस समय की दृष्टि और व्यावहारिक वास्तविकताओं का अभाव था। दारा धार्मिक आस्था और मानवीय तर्क के बीच की खाई को पाटने के प्रयास में अद्वितीय थे। वह नैतिक बुद्धिवाद बनाने के लिए धार्मिक विश्वासों के समन्वय पर आधारित तर्कसंगत बुद्धि के वैज्ञानिक चरण की ओर धार्मिक विचारों के विकासवादी प्रतिमान से आगे बढ़ रहे थे। इसने उन्हें बौद्धिकता की ओर धकेल दिया, जहां आध्यात्मिक मूल्यों ने रहस्यवादी जीवन को रास्ता दिया। मुगल साम्राज्य का यह राजकुमार शासक बनने के लिए अपने राजनीतिक और सैन्य कार्यों को निर्देशित करने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं कर सका। हालाँकि, उन्होंने समय की रेत पर बेजोड़ तरीके से अपने पदचिह्न छोड़े, जिससे वे एक महान इंसान और एक दार्शनिक राजकुमार बन गए।

[11] ऑड्रे ट्रुश्के, सांस्कृतिक मुठभेड़: मुगल कोर्ट में संस्कृत, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2016।

[12] मुनिस डी. फारुकी

[13] सुप्रिया गांधी, द एम्परर हू नेवर वाज़: दारा शुकोह इन मुगल इंडिया, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 2020